प्राकृतिक असन्तुलन के सन्दर्भ में औपनिषदिक चिन्तन की उपादेयतता

वाचस्पति मिश्र

प्रकृति (छंजनतम) के विभिन्न घटकों में उनके अवयवों का एक निश्चित अनुपात रहता है। यथा–वायुमण्डल में विभिन्न गैसों का अनुपात या किसी पारिस्थिकीय तन्त्र में विभिन्न प्रकार के जीवों की उपस्थिति। विभिन्न अवयवों में यह सन्तुलन स्थैतिक नहीं अपितु गत्यात्मक होता है। इसे विभिन्न चक्रों (यथा जल चक्र, आक्सीजन चक्र, आदि) के द्वारा समझा जा सकता है। मानव औद्योगिक विकास, नगरीकरण तथा परमाणु ऊर्जा आदि के द्वारा लाभान्वित अवश्य हुआ है, किन्तु उसने भविष्य में होने वाले अतिघातक परिणामों की अवहेलना की है, जिस कारण पर्यावरण का सन्तुलन डगमगा गया है। इसे 'ग्लोबल वार्मिग' तथा 'ओजोन छिद्र' आदि अवधारणाओं द्वारा समझा जा सकता है।